शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

ऋग्वेद संहिता में गौ संदर्भः वर्तमान युग में प्रासंगिकता

डॉ.दीपिका शुक्ला
सहा.प्राध्यापक(संस्कृत)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय संस्कृति की अन्तश्चेतना में गौ अपरिहार्य है। वैदिक यज्ञों में गोघृत, गोदुग्ध, गोमय, गोमूत्र, पंचगव्य पंचामृत का उपयोग अनेकानेक विधि-विधानों में प्रचलित था परन्तु, इनकी प्राप्ति के मूल में गाय मुख्य थी। जब भी वेदों, यज्ञों, ब्राह्मणों का संदर्भ आता था गाय स्वयं संदर्भित हो जाती थी। प्रस्तुत शोध पत्र ऋग्वेद संहिता में गौ-सन्दर्भ पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारतीय यज्ञ और कर्मकाण्ड परम्परा के निष्पादन में गौ अनिवार्य तत्त्व है। समस्त भारतीय कर्मकाण्डोपासनाओं में गाय का ही वर्चस्व है। इसकी पूजा का तो विधान है ही इसके पुत्रों को भी धर्मस्वरूप मानकर पूजा की जाती है। उन्हें वृषभ अर्थात् वर्षा करनेवाला कहा जाता है। सचमुच धरतीपुत्र वे ही हैं धरती से अन्नादि के उत्पादन के लिए और पोषण के लिए वृषभों ने ही अपना श्रमदान किया है। मान्यता है कि जीते-मरते वैतरणी बिना गाय के पार नहीं होती है। भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार तो गो सेवा में ही समर्पित था।

वेदों में गाय

भारतीय जीवन एक आध्यात्मिक एवं संस्कारित जीवन ही होता था, उसमें गोवंश का अप्रतिम स्थान था। वेदों में गाय को नमन किया है। वेदों में ऐसा माना गया है कि जिस स्थल पर गाय सुखपूर्वक निवास करती है वहाँ की रज तक पवित्र हो जाती है एवं वह स्थान तीर्थ बन जाता है। जन्म से मृत्युपर्यन्त सभी संस्कारों में पंचगव्य एवं पंचामृत की अनिवार्य अपेक्षा रहती है। गोदान के बिना हमारा कोई भी धार्मिक कृत्य सम्पन्न नहीं होता। किसी पूज्य से पूज्य व्यक्ति की विष्ठा पवित्र नहीं मानी जाती लेकिन गोमूत्र को गंगाजल के समान पवित्र और गोमय में साक्षात् लक्ष्मी का निवास कहा गया है।

'गो' का यौगिक अर्थ है 'गच्छति इति गौः' जो चलती है, गतिशील है वही गो है। सम्पूर्ण विश्व गतिशील है, इसीलिए संसार को संसार चक्र कहते हैं। इस अर्थ में सम्पूर्ण विश्व ही गौ है। वेदों में गौ को विश्वरूपा बताया गया है, वही इस यौगिक अर्थ से भी सिद्ध होता है। चन्द्रमा भी गौ है। चन्द्रमा की किरणों को भी गौ कहते है। गौ का अर्थ किरण भी होता है।

सर्वेऽपि रश्मयो गाव उच्यन्ते1

प्रकाश की किरणें सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हैं इसीलिए गौ सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। नक्षत्रों का नाम भी गौ है, क्योंकि उनमें गति है और

उनकी किरणें भी चारों ओर फैलती है। गौ शब्द द्युलोक एवं उसके अन्तर्गत सम्पूर्ण पदार्थों का वाचक है।

सोऽपि गौरूच्यते। सुषुम्नः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः।2

बिजली भी गोपद से बोधित होती है। निघण्टु के प्रारम्भ में ही पृथ्वीवाचक 21 वैदिक नाम दिये है, इनमें एक गौ भी है। पृथ्वीवाचक गौ शब्द प्रसिद्ध ही है।3

गौ शब्द पृथ्वी का वाचक है, क्योंकि पृथ्वी स्वयं गतियुक्त है और सब प्राणी इस पृथ्वी पर चलते है। इस कारण पृथ्वी को गौ कहते हैं। इन्द्रियों का नाम भी गौ है। शरीर के बाल भी गौ कहे जाते हैं। वाणी, शब्द वाक्य एवं वक्तृत्व भी गौ पद से बोधित होते हैं।

हीरा, रत्न,सुवर्ण आदि खनिज पदार्थों को भी गौ कहते हैं, क्योंकि वे गौ नामक पृथ्वी से ही उत्पन्न होते हैं। इसी तरह भूमि से उत्पन्न होने के कारण धान्य, वृक्ष, वनस्पति आदि भी गौ कहे जाते हैं। दिशासूचक यंत्र भी इसी संबंध से गौ कहा जाता है। गौ से उत्पन्न दूध, दही, छाछ, मक्खन सभी पदार्थ गौ ही कहे जाते हैं।

वैदिक काल में गायों की संख्या इतनी अधिक होती थी कि उनकी पहचान के लिए उनके कानों के उपर नाना प्रकार के चिह्न बनाये जाते थे। जिन गायों के कानों के उपर आठ (8) का चिह्न बना होता था वे अष्टकर्णी कहलाती थी। गायों के कानों को चिह्नित करने की यह प्रथा बहुत दिनों तक भारत में प्रचलित रही पाणिनि के सूत्रों में ऐसे चिह्नों का उल्लेख मिलता है-

कर्णो लक्षणस्याविष्टाष्टप´चमपिभिन्नछिन्नछिद्रसुवस्वा स्विकस्य4

ऐसी गौ सम्पदा के सम्मान में भारतीय मनीषा के आद्य ग्रंथ ऋग्वेद में ऋषि कथन मिलते है। वैदिक साहित्य में गौ, उस्रा, उस्रिका व कर्की शब्दों से गाय को कहा गया है।5 गाय के बछड़े को उस्रिका कहा गया है।6

गौ चर्म और गौ की श्लेष्मा से बनी तांत को भी गौ कहते है। गौ पद सूर्य का भी वाचक होता है। यह रसों को प्राप्त करता है, यह अन्तरिक्ष में गमन करता है।

गोभिः सन्नद्धो असि वीलयस्व। गौरादित्यो भवति। गमयति रसान् गच्छत्यन्तरिक्षे।7

वाणी को गौ कहते हैं। यह वाणी विद्याओं से सुशिक्षित होती है। इसमें प्रमाण है- आपकी समस्त विद्याओं से सुशिक्षित वाणी अनुकूलता से सेवन के योग्य होती है। इन्द्रियों को गौ कहते हैं। इस पृथ्वी पर हम अपनी इन्द्रियों को शुद्ध करते हुए इन्द्र परमेश्वर को प्राप्त करते है। वह हमारी उत्तम बुद्धि को बढ़ाता है।

विश्वा ते अनुजोष्या भूद्गौः।8

सम्पूर्ण जगत को गौ कहते हैं। जगत् की रक्षा करने वाले विष्णु ने किसी से हिंसित न होकर तीन पदों का विधान किया है।

त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः।9

गौ चर्म से बने पदार्थ को गौ कहते हैं। गौ चर्म से बने पात्र विशेष में सोमरस का दोहन करते हुए बैठे है। अंशु दुहन्तो अध्यासते गवि।10

गौ शत्रुओं को रूलाने वाली वीर मरूतों की माता वसुओं की कन्या अदिति के पुत्रों की बहिन और अमृत का तो मानो केन्द्र है। इसलिए में विवेकी मनुष्यों से घोषणापूर्वक कहता हूँ कि निरपराध तथा अवध्य गौ का वध न करो।

माता रूद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः।

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामानागामदितिं वधिष्ट।।11

वेदों में गौ का नाम ही अघ्न्या है जिसका अर्थ है- अवध्य। ऋषियों ने अन्य देवताओं के साथ गौ को भी अपना रक्षक माना है-'' अपनी रक्षा के लिए हम इन्द्र, मित्र, वरूण एवं अग्नि को मरूतों के बल को और अवध्य गौ को बुलाते हैं, बुरे मार्ग से लोग जिस प्रकार रथ को सुरक्षित रखते हैं, उसी प्रकार अच्छे दानी और सुखपूर्वक बसानेवाले ये सभी देवतागण हमें सब प्रकार के पापों से सुरक्षित रखें।

इन्द्रं मित्रं वरूणमग्निमूतये मारूतं रार्धअदितिं हवामहे।

रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वस्मान्तो अहसो निष्पिपर्तन।।12

इस मंत्र में अन्य देवताओं के साथ गौ की भी देवता रूप से प्रार्थना की गई है।" अदिति ही द्युलोक है।, अदिति ही अन्तरिक्ष है, अदिति ही माता है, अदिति ही पिता है, अदिति ही पुत्र है अदिति ही सारे देवता है, अदिति ही अतीतकालीन वस्तु समूह है और भविष्य में होने वाला कुछ भी अदिति ही है।"

अदितिद्र्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।

विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।13

कहीं गौओं के कल्याणमय रूप का वर्णन है- "गौएं आ गई हैं और उन्होंने हमारा कल्याण किया है। वे गौएं गोशालाओं में बैठे तथा हमें सुख दें, ये उत्तम बच्चों से युक्त एवं अनेक रूपावली हों। वे इन्द्र के लिए उषःकाल के पूर्व दूध देनेवाली बनें।

आ गावो अम्मन्नत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्ये।

प्रजावतीः पुरूरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरूषसे दुहानाः।।14

उपर्युक्त मंत्र से सिद्ध होता है कि गौएं मनुष्यों का सब प्रकार से कल्याण करती हैं। "गौएं जिस प्रकार गोचर भूमि की ओर जाती है उसी प्रकार मेरी बुद्धि भी उस महान तेजस्वी परमात्मा को चाहती हुई उसी की ओर दौड़ती है।

परा मे यन्ति उधीतयो गावो न गव्यूतीरनु।

इच्छन्तीरूरूचक्षसम्।।15

यहां बुद्धि के ईश्वर की ओर दौड़ने को गौओं के गोचर भूमि की ओर जाने की उपमा दी गई है। देवताओं ने अश्विनी कुमारों के लिए वेगवान् तथा सुखकारक रथ तैयार किया और बहुत दूध देनेवाली गौ का भी निर्माण किया।

तक्षन्नासव्याभ्यां परिज्यमानं सुखं रथम्।

तक्षन्धेनुंसवर्दुधाम्।।16

सवर्दुधा अर्थात पर्याप्त उत्तम और पुष्टिकारक दूध देनेवाली गौ को तैयार किया- इस वाक्य से यह सिद्ध होता है कि दूधारूपन, पुष्टिकारकता आदि गुण कुछ विशेष प्रयोगों से बढ़ाये जा सकते हैं, तक्षन् पद से यह सूचित किया गया है कि गौ में जिन गुणों का अभाव था उन सभी का विशेष प्रयोगों द्वारा निर्माण किया गया। बन्ध्या गौ को भी वैदिक काल में अश्विनी कुमारों की सहायता से दुधारू बनाया जा सकता था। "हे नेता अश्विनी कुमारों! तुम दिव्य अमृत के प्रभाव से उन सब प्रजाओं के लिए उत्तम राज्य शासन प्रस्थापित करने को निवास करते हो जिन शक्तियों से बच्चा न देनेवाली गौ को भी तुम दूध से भर देते हो उन्हीं शक्तियों के साथ तुम हमारे यहाँ भली-भाँति पधारो तुम्हारा स्वागत है।"

युवं तासां दिव्यस्य प्रशासने विशां क्षयभो अमृतस्य मज्मना।
आभिर्धेनुमस्वं पिन्वथो नर ताभिरूषु ऊतिभिरविना गतम्।17

ऋग्वेद में कुछ मंत्र ऐसे भी मिलते हैं, जिनमें दस से लेकर साठ हजार तक गौओं के दान का वर्णन है। कुछ मंत्रों में तो गौओं के झुण्डों के दान का भी वर्णन मिलता है, यथा-'हे भलीभाँति हवन किये हुए अग्ने! विद्वान लोग तेरे प्यारे हो उसी प्रकार जो धनवान दानी जनता को गायों के विशाल झुंड देते हैं वे भी तेरे प्रिय बनें।'

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः।
यन्तारो ये मधवानो जनानामूर्वान् दयन्त गोनाम्।।18

गायों के दान की प्रथा भी वैदिककाल से चली आ रही है। यथा- "इन्द्र में दूर से प्रकाश दीख पड़े इसीलिए सूर्य को द्युलोक में स्थापित किया और स्वयं गोओं के साथ पहाड की ओर विशेष रूप से प्रस्थान किया'।

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत।।19

इसमें यह सूचना दी गई है कि गौओं के चरने के लिए पहाडों पर भेजा जाय। पर्वत गोचर भूमि है, इसीलिए पर्वत को गोत्र(गायों को त्राण देने वाला) नाम दिया गया है। पर्वतों पर घास और जल की सुविधा होने के साथ-साथ गौओं को शुद्ध वायु और व्यायाम प्राप्त होता है।

ऋग्वेद में ऐसा वर्णन है कि एक बार इन्द्र भगवान ने समस्त सभा के बीच यह घोषणा की- "हे पोषण करने वाले व्यापक तथा शत्रुदल पर आक्रमण करने वाले वीरवर हमारे कर्म गौ को प्रमुख स्थान देकर नियुक्त कीजिए और हमें कल्याणमय स्थिति में कीजिए जिससे हम सुखी रहें। अर्थात् गाय की महिमा समझाइए।'

समिंद्रा राया समिषा रभेमहि सं वाजेभिः पुरूश्चन्द्रैरभिद्युभिः।
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि।।20

हमारी गौएं जहां पानी पीती हैं, उन दिव्य गुणयुक्त जलस्थानों से मैं प्रार्थना करता हूं कि वे समीप आ जाए। उन नदियों को मैं हविर्भाग देता हूं।

अपो देवी रूप हवये यत्र गावः पिबन्ति नः।
सिन्धुभ्यः कत्र्वं हविः।21

ऊपर उन नदियों की स्तुति की गई है, जहां वैदिक काल की गौएं जल पीती थी। बड़े भारी जल के भंडार को ऊपर उठाकर नीचे उडेल दो, हमारे सामने जल से भरी हुई छोटी-छोटी नदियां बहने लगे। आकाश और भूलोक को जल के द्वारा विशेष रूप से आर्द्र कर दो, जिससे गौओं के लिए सुन्दर पीने की जगह बन जाय।

महान्तं कोशमुदचा निषिन्च स्यन्दता कुल्या विषिताः पुरस्तात्।
घृतेन द्यावा पृथवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्यध्न्याभ्यः।।22

ऊपर की प्रार्थना से यह सिद्ध होता है कि हमारे यहां के लोगों को गौओं के आराम की कितनी चिन्ता रहती थी। 'वायु सुखकारक होकर गायों के समीप बहती रहे और वे बलयुक्त वनस्पतियों का भक्षण चारों ओर से करती रहें तथा पुष्टिकारक एवं जीवों को धन्य करने वाला जल प्रवाहों का पान करें। हे रूद्र! पैरों से युक्त इस गो रूप अन्न को सुख दो।

मयोभूर्वातो अभि वातूस्रा ऊर्जस्वतीरोषधीरा रिशन्ताम्।

पीवस्वतर्जीवधन्याः पिबन्त्ववसाय पद्वते रूद्र मृल।।23

नदियों में बड़ा भारी तेज छिपा हुआ है, उन नदियों के समीप अभी हाल की ब्याही हुई गौ पवन(सुमधुर) दूध धारण करती हुई घूमती है। जब इस इन्द्र ने ये सारे दूध आदि सुस्वादु पदार्थ गौओं में इकट्ठे किये, तब इसने उन्हें भोजन के लिए वहां रखा था।

महि ज्योतिर्निहितं वक्षणास्वामा पक्वं चरति बिभ्रती गौः।

विश्वं स्वाद्म सम्भूतमुस्रियायां यत्सीमिन्द्रो अदधाद् भोजनाय।।24

नस्ल सुधार ही गोवंश की उन्नति का साधन है। हमारे ऋषि इस बात से भली-भांति परिचित थे। "वृत्र की माता वृत्र के शरीर पर गिर पड़ी, तब इन्द्र ने उसके शरीर के नीचे हथियार मारा। उस समय माता ऊपर और पुत्र नीचे पड़ा था। गौ जिस प्रकार अपने बछड़े के समीप रहती है, उसी प्रकार यह दानवी माता भी अपने लड़के के समीप ही पड़ी थी।

नीचावया अभवद् वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव वधर्ज भार।

उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद्अनुः शये सहवत्सा न धेनुः।।25

यहां वृत्र की माता ने पुत्र के प्रति जो प्रेम प्रदर्शित किया उसे गाय के बछड़े के प्रति प्रेम की उपमा दी गयी है। गौ के अपने बछड़े के प्रति प्रेम को इस प्रकार आदर्श रूप में स्वीकार किया गया है। पुत्र प्रेम के लिए 'वात्सल्य' शब्द का प्रयोग भी इसी बात को सूचित करता है। गाय हमारी माता, वृषभ हमारे पिता- ये दोनों हमें स्वर्ग और ऐहिक सुख प्रदान करें।

गौर्मे माता वृषभः पिता में दिवं शर्म जगती मे प्रतिष्ठा।26

गायों का दूध भूलोक का अमृत है। इस विश्व की सौर ब्रह्माण्ड की, भगवान की उत्पत्ति तब वे यहां गायों को रचना न भूले इस मंत्र में गोभक्त गण गोलोकरूप निवास स्थान में जाना चाहते हैं जहां भगवान् विष्णु का परम पद बैकुण्ठ है।

तावां वास्तून्युश्मशि गमध्यै।

ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः।।27

आध्यात्मिक ज्योतिर्मयी उषा गौ अर्थात् दिव्य चेतना की प्रसारिका किरणों की माता है। महर्षि वसिष्ठ ने गौ को देव कार्य में भाग ग्रहणकारिणी माना है। इससे जहां वह अवरूद्ध है वह स्थान खुल जाता है। और गौ मनुष्य को दे दी जाती है। गौ अपने आध्यात्मिक वैभव में इतनी अलंकृत और व्यापक है कि वह वैदिक ऋचाओं के बहुत बड़े भाग को समाहित कर लेती है।

अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न मातरः।28

उपर्युक्त मंत्र में पणियों से गौ लाने और समाज के लिए ज्योति प्राप्त करने का कथन करता है। इन्द्र अंधकार में से गौ रूपी किरणों को दुहता भी है। भारत में प्राचीन काल में सम्पत्ति की परम्परा का आधार गाय ही थी। वैदिक ऋषियों को गाय का अपने बछड़े के लिए रंभाना कानों को इतना सुखद प्रतीत होता था कि वे देवताओं को बुलाने के लिए प्रयुक्त अपने शोभन गावों की इससे तुलना करने में तनिक भी नहीं सकुचाते थे। भारद्वाज ऋषि अपने एक मनोज्ञ मंत्र में कहते हैं- गाय भग देवता है,गाय ही मेरे इन्द्र है। गाय ही सोमरस की पहली घूंट है ये समग्र गायें इन्द्र की प्रतिनिधि है। मैं हृदय से, मन से इसी इन्द्र को चाहता हूं।

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान्,गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।

इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम्।।29

हे सोमदेव! हमारे अंतःकरण में तू जिस प्रकार गौएं जौ के खेततों में आनन्द पूर्वक संचरण करती हैं और मानव अपने निजी घर में सुखी होता है वैसे ही रमण कर।

सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेप्वा। मर्य इवस्व ओवयो।30

गाय को पीड़ित करने वाले के लिए ऋग्वेद में कहा है कि “जो सर्वभक्षी अनवीय वृत्तिवाला बनकर मनुष्य का, घोड़े का और गाय का मांस भक्षण करता हो, खाता हो तथा दूध की चोरी करता हो, उसके सिर को कुचल देना चाहिए।

यः पौरूषेयेण क्रविषा समङ्.कते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।

यो अघ्न्याया भरति क्षीर मग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च।31

इस मंत्र में वेद ने ही गौ, घोड़े तथा नरमांस भक्षण का निषेध किया है।

निष्कर्ष

गायों के दान की प्रथा वैदिक काल से चली आ रही है। वेदों में गौ को अवध्य व परमपूज्या माना गया है। गाय के शरीर में समस्त देवताओं का निवास माना गया है। गाय मानव सेवा में निरन्तर व्यस्त है जिस प्रकार माँ दूध पिलाकर बच्चे को बड़ा करती है उसी प्रकार गाय सारी वनस्पतियों को उदरस्थ कर लेती है परंतु बदले में सारे जगत को अमृततुल्य दूध, मूत्र और पुरीष देती है। जिससे मानवों का स्वास्थ्य बढ़ता है। जीवनीय वृष्य, बल्य और तेजस् के लिए गोदुग्ध भारत में सुदीर्घ अतीत से समाहित रहा है तो सर्वाधिक आरोग्य हेतु गोमूत्र चिकित्सा आज भी प्रतिष्ठित हो रही है। अग्नि के संवाहक ईधन के रूप में, कभी समिधा के रूप में, कभी पाचक अग्नि के रूप में तो कभी वातावरण शोधन के रूप में गोमय का अवदान आज भी अक्षुण्ण बना हुआ है। इसीलिए गौ को केवल दूध देनेवाली पशु न समझे अपितु मानव कल्याण करने वाली देवी के रूप में पूजा करें।

संदर्भ ग्रन्थ

1.निरूक्त अध्याय द्वितीय प्रथम पाद 7 चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी

2.निरूक्त अध्याय द्वितीय पंचम पाद 6 व चतुर्थ अध्याय चतुर्थ पाद 24

3.निरूक्त अध्याय द्वितीय प्रथम पाद 1

4.अष्टाध्यायी पाणिनि 6/ 3/ 115 चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी

5.ऋग्वेद 1/ 173 चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी

6.ऋग्वेद 5/ 58/ 6

7.ऋग्वेद 6/ 47/ 26

8.ऋग्वेद 1/ 173/ 8

9.ऋग्वेद 1/ 22/18

10.ऋग्वेद 10/ 94/ 9

11.ऋग्वेद 8/ 101/ 15

12.ऋग्वेद 1/ 106/ 1

13.ऋग्वेद 1/ 89/ 10

14.ऋग्वेद 6/ 28/ 1

15.ऋग्वेद 1/ 25/ 16

16.ऋग्वेद 1/ 20/ 3

17.ऋग्वेद 1/ 112/ 3

18.ऋग्वेद 7/ 16/ 7

19.ऋग्वेद 1/ 7/ 3

20.ऋग्वेद 1/ 53/ 5

21.ऋग्वेद 1/ 23/ 18

22.ऋग्वेद 5/ 83/ 8

23. ऋग्वेद 10 / 169 / 10

24. ऋग्वेद 3 / 30 / 14

25. ऋग्वेद 1 / 32 / 9

26. ऋग्वेद 1 / 54 / 6

27. ऋग्वेद 1 / 92 / 4

28. ऋग्वेद 9 / 12 / 2

29. ऋग्वेद 6 / 28 / 5

30. ऋग्वेद 1 / 91 / 13

31. ऋग्वेद 10 / 87 / 16